"झुनिया" ग्रामीण - स्त्री व्यथा की कहानी

गणेश श्रीराम इंगले
शोध छात्र

लक्ष्मण उध्दवराव खरात
शोध छात्र

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, छत्रपति संभाजीनगर,
दूरभाष. ९९२१३१९९५३/९४०३२०३२१३

ग्रामीण कथा साहित्य में ग्रामीण स्त्री व्यथा को महत्व दिया गया है! वर्तमान समय में नारी लेखन को बहुत ही महत्व प्राप्त हो रहा है! भारत में ही नहीं विश्व में भी नारी मुक्ति, नारी समानता, अस्मिता की खोज आदि विषय को आंचलिक (ग्रामीण) साहित्यकारों ने अपने साहित्य में चित्रित किया है! फणीश्वर नाथ रेणू के मैला आंचल उपन्यास से ग्रामीण परिवेश ज्यादा तर दिखाई दे रहा है! इंदुप्रकाश पांडेय के अनुसार "मिथिलेश्वर जी आंचलिक उपन्यासकार है और इनके उपन्यासों में नारी मुक्ति की समस्याओं को स्थानिक रंगों में चित्रित किया है! "१"

साठोत्तरी उपन्यासकारों में मिथिलेश्वर एक सजग साहित्यकार के रूप में उभर कर सामने आए हैं! उपन्यास में पुरुष प्रधान भारतिय संस्कृती में नारी के प्रति दृष्टि ,समाज से प्रताड़ित होना, उसे तुच्छ समझा जाना, उस पर होता हुआ अत्याचार, विधवा नारी, पुरुष यौन समस्या में जो जूझती नारी आदि नारी की समस्याओं और स्थितियों का विवेचन है! स्त्री के वैयक्तिक और सामाजिक परिपार्श्व के बोध का स्त्री जीवन है!

मिथिलेश्वर ने हिंदी साहित्य में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है! मिथिलेश्वर के अब तक आंठ उपन्यास तथा ग्यारह कहानी संग्रह प्रकाशित हुए हैं! लेकिन झूनिया यह उपन्यास सबसे सशक्त रचना मानी जाती है! "मिथिलेश्वर का उपन्यास झूनिया नारी का यथार्थ चित्रण अंकन करता है! "२"

झूनिया के प्रमुख पात्रों में झूनिया ही है! झूनिया अत्यंत साधारण गरीब अनपढ़ गवार स्त्री है, मजदूर की बेटी है! मेहनत मजुरी करना जानती है ! बचपन में ही भाई और

पिता को खो चुकी है ! ऐसे में वह बेसहारा हुई है ! अपने आप में वह संघर्ष करती है! समाज में उसका हर कोई शोषण करना चाहता है! झूनिया को हर कोई पाना चाहता है! लेखक कहते हैं झूनिया का हर कोई शोषण करना चाहता है क्योंकि वह गरीब मजदूर की बेटी है और उसका शोषण आसानी से हो सकता है !शोषण टूटी हुई मंडई और फूटी हुई हंडिया में कुछ भी छिपाया नहीं जा सकता! गरीबों की हालत भी ऐसी होती है!"

झूनिया गांव में जितने भी पुरुष लोगों के संपर्क में आयी है वह सभी कामुकता से उसका उपभोग लेना चाहते हैं ! इन सभी लोगों के बीच वह संघर्ष करते हुए अपने आप को सक्षम बनाती है!

संक्षेप में कहा जा सकता है कि मिथिलेश्वर के उपन्यास यथार्थ और विश्वसनीय है! उन्होंने झूनिया नामक उपन्यास में नारी संघर्ष और समाज से प्रताड़ित नारी समस्या का चित्र प्रस्तुत किया है! भीष्म साहनी के अनुसार ग्रामीण जीवन का विश्वसनीय, सटीक, बोलता चित्रण उनके उपन्यासों की बड़ी उपलब्धि है! "४"

झूनिया उपन्यास का कथ्य आज भी वर्तमान समय में दिखाई देता है! आज भी गांव की स्त्री शोषित, पीड़ित और अत्याचारित है! पुरुष प्रधान भारतीय संस्कृति में आज भी नारी के प्रति दृष्टि हीन है और वह समाज से प्रताड़ित है! ईश्वरदत्तशील के मतानुसार क्या नारी मुक्ति नहीं हो सकती ,क्या सदैव नारी का समाज में ऐसा ही हाल होगा! "५"

संदर्भ

१) हिंदी के आंचलिक उपन्यासो मेजीवन सत्य - इंदुप्रकाश पांडेय - प्र १०१

२) हिन्दी साहित्य का इतिहास - ईश्वरदत्त शील, डॉ. आभाराणी प्र,४२४

३) झूनिया - मिथिलेश्वर - प्र,१०

४) इंडिया टुडे - भीष्म साहनी - २१ फरवरी २००१

५) हिन्दी साहित्य का इतिहास - ईश्वरदत्तशील, डॉ, आभाराणी, प्र,४२६